HD-05

December - Examination 2018

B.A. Pt. III Examination

आधुनिक काव्य

Paper - HD-05

Time : 3 Hours] **[Max. Marks :- 100**

निर्देश : यह प्रश्न पत्र तीन खण्डों 'अ', 'ब' और 'स' में विभक्त है। खण्ड 'अ' अति लघूत्तरात्मक है, खण्ड 'ब' लघूत्तरात्मक है और खण्ड 'स' में निबन्धात्मक प्रश्न हैं।

खण्ड – 'अ' **$10 \times 2 = 20$**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर अनिवार्य हैं। आप अपने उत्तर को एक शब्द, एक वाक्य या अधिकतम 30 शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 2 अंकों का है।

1) (i) लम्बी कविता की दो विशेषताँए लिखिए।

(ii) किन्हीं दो लम्बी कविताओं के लेखक के नाम व कविताओं के नाम बताइए।

(iii) सुमित्रानंदन पंत किस प्रवृत्ति के कवि हैं?

(iv) मुक्तिबोध की 'ब्रह्मराक्षस' कविता का मूल प्रतिपाद्य क्या है?

(v) धूमिल के काव्य की दो विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।

(vi) अज्ञेय की लम्बी कविता 'आँगन के पार द्वार' की विशेषता को लिखिए।

(vii) हरिवंशराय बच्चन की दो कविताओं के नाम लिखिए।

(viii) किन्ही दो महाकाव्य रचयिता व कृति के नाम लिखिए।

(ix) खण्डकाव्य को परिभाषित करते हुए उसकी दो विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

(x) नरेश मेहता के काव्य की किन्हीं दो विशेषताओं को उद्घाटित कीजिए।

खण्ड – ब **4 × 10 = 40**

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम 200 शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

2) खण्डकाव्य को परिभाषित करते हुए उसके स्वरूप निर्धारण को विवेचित कीजिए।

3) सुमित्रानंदन पंत की लम्बी कविता 'परिवर्तन' का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में कीजिए।

4) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की लम्बी कविता 'सरोजस्मृति' के अनुभूति पक्ष की विशेषताओं को उद्घाटित कीजिए।

5) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की लम्बी कविता 'कुआनोनदी' के मूल प्रतिपाद्य को बताइए।

6) नरेश मेहता के खण्डकाव्य 'प्रवाद पर्व' के अभिव्यंजना पक्ष पर प्रकाश डालिए।

7) सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

''यह हिन्दी का स्नेहोपार
है नहीं हार मेरी, भास्तर
यह रत्नहार–लोकोत्तर वर।'' –
अन्यथा जहाँ है भाव शुद्ध
साहित्य कला कौशल प्रबुद्ध
हैं दिये हुए मेरे प्रमाण
कुछ नहीं प्राप्ति को समाधान
पार्श्व में अन्य, रख कुशल हस्त
गद्य में पद्य में समाभ्यस्त।''

8) सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

''रवि निकलता
लाल चिन्ता की रुधिर सरिता
प्रवाहित कर दीवारों पर
उदित होता चंद्र
व्रण पर बाँध देता
श्वेत–धौली पट्टियाँ
उद्विग्न भालों पर
सितारे आसमानी छोर पर फैले हुए अनगिन–दशमलव से
दशमलव–बिंदुओं के सर्वत

पसरे हुए उलघे गणित मैदान में

मारा गया, वह काम आया

और वह पसरा पड़ा है

वक्ष बाँहें खुली फैली

एक शोधक की।

9) सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

''अहे निष्ठुर परिवर्तन

तुम्हारा ही ताण्डव नर्तन

विश्व का करुण विवर्तन!

तुम्हारा ही नयनोन्मीलन

निखिल उत्थान, पतन

अहे वासुकि सहस्त्र फन।

लक्ष्य अलक्षित चरण तुम्हारे चिन्ह निरन्तर

छोड़ रहे हैं जग के विक्षत वक्षस्थल पर

शत–शत फेनोच्छवासित, स्फीत फुतकार भयंकर

घुमा रहे हैं घनाकार जगती का अम्बर

मृत्यु तुम्हारा गरल दंत, कंचुक कल्पान्तर

अखिल विश्व की विक्र

वक्र कुंडल

दिग्मंडल।''

खण्ड – स **$2 \times 20 = 40$**

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम 500 शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

10) हरिवंशराय बच्चन की लम्बी कविता 'दो चट्टानें' की अनुभूति एवं अभिव्यंजना पक्ष पर विस्तृत प्रकाश डालें।

11) आधुनिकता का आशय स्पष्ट करते हुए उसकी पृष्ठभूमि पर निबन्ध लिखिए।

12) लम्बी कविता व खण्डकाव्य को परिभाषित करते हुए उसका तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कीजिए।

13) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की लम्बी कविता 'सरोजस्मृति' के अनुभूति व अभिव्यंजना पक्ष की सोदाहरण विवेचना कीजिए।